



ॐ नमः श्री कृष्णाय ॥
 किन विधि र्थापनं भास्ति
 श्री लंम सुला कालं खन पादुध
 आदो सुशो र्ध गुद्र पादा र्ध गु
 लं विमर्जनं गणेश पूजा अथ

॥ कुरु भास्ति कवसि अर्चमा ह ॥ अथ पतिपा
 कवसि अर्चनं ष कानादि लिखतु लिख
 जी कुरु ॥ कुरु पाप विमर्जनं स्थपय वलि ॥
 वृम सुलप अंगव सिन्धु नय म सुलधिः
 विसु मा धिका वयन ॥ कद नू क सु म म र ग म

जहं वं हा ॥ सरु प्रात सर्व सत्त्वानां व
 पय कि स्वा हा ॥ २ ॥ ॐ कं जा
 जां स सी उद्ध वि कट वली द
 सरु कं पं न पि भा चो न्मा न्मा न
 उ स म य व क उ म म सर्व सिद्धि म प य

सिद्धिं क वृ २ कं ३ रु क ज ध व आ हा
 स सि ज ४ कं ४ व ४ हा व क दा कि नी स म य हा व
 यो नि भा र्च क उं र्ख र खा हि २ स वं क क वा कं
 प स्मा व ज क ज कि या द य ॐ मं व ली गु क
 उ ज डु पी व रु मि य ॐ दे व लो ग रु

२३३ रुद्र स्त्राहा ॥ ४ ॥ अंताव भी सर्वप्रकाशना ह्यनासनी बहुमा ब्रह्मविधि
हनी सर्वदेवा सुवनन वगन्धर्वान् वास्तुकि न्नब्रमहा वगा रूप इत पत्तमली
सर्वरूपकथय

[illegible]

कश्चादपुत्रोपायकुंजकृतं वहा ॥ १ ॥ फनसर्वं त्वानीव भाकि क्व वृष्टिं नानं व
 र्णुपि क्व वृष्टं ३ रुद्रकथ
 विजयन नो यन रूप प्रमहा
 नरुद्रक कसहाय प्रशासप
 कुरुदयमाहं न चागन संपविवा नान् नीधुं देवली गुह्य १ खादुपीवकु

ॐ नमः वल्लिकाये ॥ ॥ वक्रायनी पीतवर्णं कसलु लूधवा लुहा वदमा गा
 विष्णवा की नमामि हं मे वारु नी ॥ १ ॥ वक्रायनी धनवर्णं हं किं लूधवा
 धवभीति नशा चावृद्धनान मासि वृषवाहिनी ॥ २ ॥ कोमावी वक्रवर्णं
 हं नकि हं हं ह्या न के विनशा ओमवदनी व नमामि विवाहिनी ॥ ३ ॥
 वेष्टुवी स्यामवर्णं हं वक्रहं मनाहना विनशा सोमवदना नमामि गवृद्धवाहिनी

॥ ४ ॥ वावाहि वक्रवर्ध ह्रीं ~~मीमी~~ कू भध वीं शुक्ल घनधा व र्ध घनका लासा नमा
 मिमहि रव वाहिनी ॥ ५ ॥ ॐ स्वा
 यन (ओम्) नमामि गज वाहि
 भी कृवागी कृत्तूपा वनमामि
 लख शुभ वगी रि नश सोम्य वदना नमामि सिंघ वाहिनी ॥ ६ ॥ गभ पतिं वक्रव

नमस्तुत कीड पूजा कृत्वा ॥ कत ४ कल भल वना ॥ ॐ वजी मृगाद क ०० रूत फ
 २ महान फ स्वाहा ॥ मभुकिनी
 नतं पशुं ॥ पूर्व (धन) ग्रायव
 वायुयनी लं उरु वपी कं ॐ
 जग पूरु वं उ मं शु सा सुन र्थ य क्षपवी किनी सुव्य पप्रव वद हस्त वाभ पमारे

स्यात्वावना ॥ धूपनिलंजनविधि (थी पूजा) धूपकाण ॥ रुदनूश्रुयामयकीलनं ॥
 निनालसकीलनताय ॥ ॐ घ घघाठयहं सर्वदृष्टानकीलयहं हृद् ॥ नमः
 स्नानरुस्येवावना ॥ उपविहू • यथामयकीलमल्लेखेकभूयाकावमूपवि ३
 गपवर्षविकवर्षसर्वविघ्ना • ककालं हंजं विविन्मयं कावमवायूमधुलं
 वंकावममिमधुलं वंकावमसमूहं कलमल्लेखपीतलं कावमवधुवसुपीतमाहं

उमधुलनरूपविहूकावममधुवत्तमयंसुमधुं विहूवा ॥ नरूपविहूकावमवि
 धवकमयं नरुमल्लेखीक • उंकावाधिरिक्तं वेलावनदूपातनत्यविभाः
 मलकूदगमवविहूवाधूप • निलाञ्जनलाहानि वंकाविधि (थी पूजा) पव
 मूहकानकीलनभकनकीथ • कालिनवकमधिवर्कआचार्यनतायगुरुन
 पूषमालासास्यजाप ॥ मरु ॥ ॐ श्री ४ विघ्ना नरुहं हृद् ॥ ॥ धन ॥ १०८ ॥ थ

धर्मासिद्धं लयस्वांमाला गाय कृतश्रुका वामस्वमित्यादि॥ पं ला घं मुक्ति॥ ॐ द
यामहा वाजा ला कपालामहा
मिहं नमस्तु कोट वाजानां स
वाजं नमामिहे॥ कर्पण॥ वज्र
धमद्वन॥ ॥ वसिष्ठ॥

द्वि का॥ दभदिकस्त्रि तावी वा ला कपालान्त्रमा
वर्द्ध निवा नर्धे॥ ॐ ला क विजयादीनां काट
भा विज्ञान॥ ॐ रूपतिष्ठि कट्टि वज्र स्वाहा॥

४

ॐ नमः श्री वज्र सुखाय॥
किं च स्वाहा॥ क मायं का वज्र
मूर्धु चूडिकायां मित्रमिपम
लां मां पां तां वं का लजा रूपं वा
वसं मूर्धं कट्टि पवि॥ ॐ का वज्रं पथ वायू सुखा वं पथ पेता कां स्वा का वज्रं वा लुकि

॥ कट्टि वलिष्ठं संखन संखन वना॥ ॐ श्रीं वमनं प
वायू मधुनं वं का वसाग्नि मधुनं कता पविदि
लं जनं कट्टि कट्टि पविपू विना॥ ॐ श्रीं वं वं
मृत् पवि पं पथ वं ॥ ॐ श्रीं वं श्रीं का वज्रं कीः
वसं मूर्धं कट्टि पवि॥ ॐ का वज्रं पथ वायू सुखा वं पथ पेता कां स्वा का वज्रं वा लुकि

२

मानं समयपमानं कद्रूपमानं नमः सन्धनवजालिज ४४ वं हा ४४ ॐ हवभुक्ति
 कामिहवा ॥ ॥ थनवलि विय ॥ ॥ ॐ कव २ कव २ वच २ जभय २
 कारुय २ जी २ दह २ पच २ रु क २ वसू विना कमा लावल निमि सुफपा ना
 वंग कडु जंग कसु पम्वा कज य २ आ कय २ जी २ हं २ हं २ जी २ हं २ कि
 सि २ मि लि २ धि लि २ हि लि २ कं २ रु २ स्वा हा ॥ १ ॥ ॐ ख २ खा हि २ सर्वय कवा क

४२

सहृकपक पिभा वात्मादापस्मावज कजकि ना दयः ०० दं वलि गु कुरु समय व कुरु
 सर्व सिद्धि भयय कुरु यथे वर थे वडु कथं जिगर्थ मिघं मारु कामर्थ ममस
 वसत्ताना चर सर्वा काव कयाः सत्सुख पवित्रय सहाय कानां हं वडु हं २ रु २
 २ स्वा हा ॥ २ ॥ ॐ ०० डा दि व जि सह द व सं धे बी म चर गु कुरु वलि वि मि
 वृक्ष (ये य मने म सु रूप कि च्च आ पां प कि वा यू धना धि प कि च्च ०० ॥ न रु ना धि प कि

७

कन्धयश्माहयश्विधिसयश्नुं निदभा कव्यावत्समसर्वस्त्वानाच्छ्रित्वभसुवर्ग
 धनधन्वयोवमावाग्यससुखा निमहासुखपवृक्षययावदावाधिमलुत्तपयश्
 कंठाषयससुमनाभाकिवः कांकूकूंॐ श्रीं सर्वदृष्टा मूढापहंॐ कभा
 किंवकांकूकूस्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ श्रीं कजमहाकालाय कूक्षभासनवकाकाय ॐ
 श्रीं कांकूकूं रुद्रमयमांसपूषधूपवक्रमावपाताव शूद्रनागदेवयक्रवाकसगुरु ॥

४६

दम्बलिहाहं स्वादिश्खरवहं ज० हं महासुहासु गऊं २ कृष्णवर्ग्य ॐ ॥ १ ॥ ॐ वाकू ॥ १ ॥ वाकू कावा
 मनीश्चवसु ० ० दम्बलिगन्धपू विवन्दस्यार्थ कूक्षमंगव ० कूवहस्यनि कंकु
 वातां लीर्घ्य आगच्छ ० ० देवलि षधूपदिपकू ददामाहं कंवा गनस सपविव
 सपनिवावान् वक्रधव आग्यपयनिहं रुद्रस्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ हा ० वनावविकटः

८

ॐ दम्बलिगन्धपूषाधूपदीपदग्धसर्कवादि सतिर्गुण २ ख ख खा सि २ म म सु
 वसेत्त्वानाथ २ भा कि पूष्टि क वून का गु प्रिं कू वू ॐ आ ४ वी ४ हूं रु द्वा हा ॥
 १५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय दवा सु वन व य क वा क स दि हि व न्दि क पा द य
 ग्मा य भू भ ग्मा दि स हि कं गु ण २ भू भ ग्मा व स हि द य प्र व व चि कि क क ल य
 वा य का वू लिका य ॐ दम्बलिगन्धपूषाधूपदीपदग्धसर्कवादि सतिर्गुण २ मां सर्व सत्त्वानाथ २ ४ खा हा न

४२

य २ उ र्च य २ स च य २ वू च स भू धर्म स भू सं घ स भू स भू वा दि स त्व न ॐ आ ४ हूं जी
 रु द्वा हा ॥ १६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ग व भू आ र्थ म हा प कि स वा आ र्थ म हा सा ह
 प्र प म द नी म हा मा य वी म हा भी क व ती म हा म हा नू भा वी नी वू धा श्वे व म
 हा मा नं वि द्या दे वी म हा व सा मा म कि रु कू टि श्वे व ता वा दे वी क था कू भी व
 ज सं क व या श्वे व ता म हा श्वे व ता क थे व न्द्र म हा का ली व द्र कि च क ज द्र कि क था प वा सु

२

पाणि वज्रपाभी व वज्रपाणि महत्वा वज्रमात्रा महविद्या कथे वा मृत् कूटली श्रु
 पत्राजिता महद्वी कासकः ॥ १ ॥ भूमहा वज्र कथा धन्या महर्गो ले पत्र कूट
 वी वव व पूषा दक्षि मणि वृज सुवर्ण कभी व पिम्प वा महर्ग जा क था द वी ध
 या व वि यू ला नि नी वा रु स्ये क जय व व वू चा कि कि क ना य का का पा नि नि म
 हा हा गा ध न्या सं कं ध वी क था श्रु न्या श्र व ह वा वि द्या सु खानू ग ह का नि का ॥ क थ था व

५०

कालिक बालिक कूटली भूखी नी कम वा की हा वि कि महद्वी ह वि क भी य म इ न्द्रि य
 म वा रु सी व व कि व रु क ग स नी प्र कि वृ (थ दं गें ध पू षा धू प दी पं व नि दा स्या
 मि व का कू वू म म स व स त्वा ना थ र् स व रु था प द व स ४ जी व रु व र्ष भं रं प
 अ रु स व दा स कं सि य रु म रु प द स्वा हा ॥ १० ॥ अं ग्रा ४ जी ४ हा ४ उ षी षः
 व क व रु जी मा रु क प रु क प व मा रु क वि द्या रु क श्रु व रु द कि वा रु नी रु द रु

१०

महावसुखः सपविवावः ४०० दम्बलिगन्धपूषाधूपदीपवाकृत्तदामाहं कृत्वा
 गन्धसपविवावः ४०० दम्बलिगन्धपूषाधूपदीपवाकृत्तदामाहं कृत्वा
 कृत्वा ममसर्वसुखानाथः ॥
 कृत्वा ममसर्वसुखानाथः ॥
 कृत्वा ममसर्वसुखानाथः ॥
 कृत्वा ममसर्वसुखानाथः ॥

५१

दम्बलिगन्धपूषाधूपदीपमकृत्तदामाहं कृत्वा गन्धसपविवावः ४०० दम्बलिगन्धपूषाधूपदीपमकृत्तदामाहं कृत्वा
 लिगन्धपूषाधूपदीपमकृत्तदामाहं कृत्वा गन्धसपविवावः ४०० दम्बलिगन्धपूषाधूपदीपमकृत्तदामाहं कृत्वा
 कृत्वा ममसर्वसुखानाथः ॥
 कृत्वा ममसर्वसुखानाथः ॥
 कृत्वा ममसर्वसुखानाथः ॥
 कृत्वा ममसर्वसुखानाथः ॥

११

यत्कुरुध्वजपताकादिममसुपविवादानां पूर्वगृह्य २ ख २ खा हि २ भाषय २ हा विमीमः
 हाय कभी सर्वकामार्थसाधनी
 लग्नवी बवी बध्नाभां पविक
 गृह्य २ कं स्वाहा ॥ २० ॥ ॐ नमो
 नासनी सर्वदत्ता गय का दिरुय ४ प समनी बाजवो बा दिरुय विध्वं सनी रुगवनी

गुह्यमाहूकं सर्वगहनकृद्गुह्यमभीष्टं आगच्छ २०० दम्बलिङ्गकृद्गुह्यमसर्वसत्त्व
नां हन २०० किंपूर्ष्टिं कृत्वा हा ॥ २१ ॥ एकविंशति ॥ धनश्च यहायक ॥ ॥
ॐ एकवृत्तम् अभिषेकं पर्वण
विष्णुपुत्रः राजनस्य नगक
दवदरुसुमाभूतः कृष्णकलासी विरुत्सी नन्दानीक विनायकाः चामू अधाव विरु

१२

ली उमादवीरुसंरुवा ॥ जयच्च विजया चैव श्रुतिना श्रुतवाजिना ॥ रुद्रकालीमहा
 काली रूपकाली विद्यागिनी ॥ ॐ ह्रीं व ह्रीं धात्रीं इष्टीं लम्बकीं हि दलम्बनीं ॥
 कम्पाजी द्विपिनी चापिणमाव ॥ स्थिरयागिनी धावतूपा महातूपा इष्टतूपा क
 पाविनी कपासमानमानिन्या ॥ स्वदांगमयमहर्षिक रक्ताहस्ता पशुहस्ता वज्र
 हस्ता धनुस्तथा महासूखमहावाज पञ्चजकिनी महाकल सुर्वकामार्थसाधकया

५३

गमयतु महावाही वज्रध्वनी पररुक्ता रुक्तागना महाकाया निवर्त्तनयागभृष्टिका
 ॐ दं वज्रध्वनी आरु आवाह ॥ सर्वसिद्धिनां ॥ ॐ कर्क २ वधन २ ख २ खादि २
 खादन २ सर्वदक्षपदक्षानुहन् ॥ २ घाटय २ दानपत्रं १ श्रुत कस्य ॐ दं कार्यसाध
 यक्तं २ रुद्र २ खाहा ॥ ॥ ॐ ॥ दवास्तु १ १ सुर्वकुं गसिद्धा १ ह्नाकासूपनाक
 टपूतनाश्च गन्धर्वयक्षा गृहादयश्च यक विरूमा निवसन्ति दिव्या ॥ न्यस्तं कजानू

शुभं ॥ दानपत्रमिच्छादि ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ वलिसुखी कृष्णकर्म मूकमर्न पूजायाय ॥

धिसमाप्रा ० ॥

१४

५५

आशा शक १९५३

1263

ASHA ARCHIVES

शुभं ॥ दानपत्रमिच्छादि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

२ वृद्धवृष

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८

२ नृपकैठव गो ८